मुल्य रु। ५-००

सलंग अंक ७८ अक्टूबर-२०१३

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख

मासिक

जलझीलणी एकादशी शोभायात्रा का दर्शन

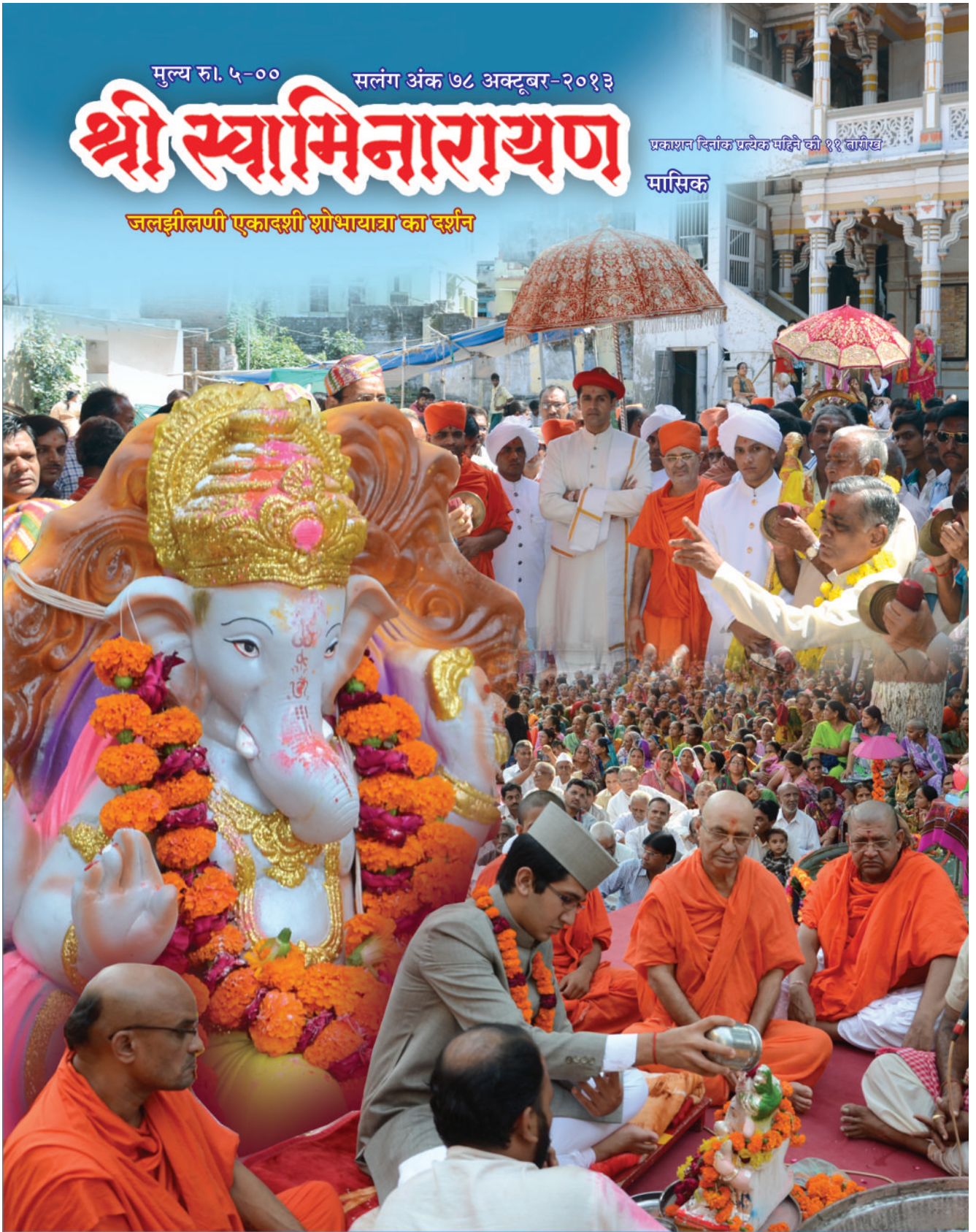

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में जलझीलणी एकादशी तथा वामन जयंती के प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए तथा साबरमती नदी में ठाकुरजी को नौका में विहार कराते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री साथ में देव स्वामी तथा संत मंडल (नारणघाट) (२) जेतलपुर मंदिर से जलझीलणी की शोभायात्रा तथा देव सरोवर में ठाकुरजी को नौका विहार कराते हुए संत मंडल । (३) कांकरिया मंदिर में सिद्धेश्वर महादेव के यज्ञ की आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (४) सीनेमीन्सन-न्युजर्सी मंदिर में जलझीलणी दर्शन । (५) कांकरिया मंदिर जलझीलणी दर्शन । (६) प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें जन्मोत्सव प्रसंग के उपलक्ष्य में गांधीनगर (से. २६) में प.भ. गोरधनभाई मुबारकपुरावाला) के यहाँ आयोजित सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ७ ● अंक : ७८

अक्टूबर-२०१३

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०६
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०७
०३.	ध्वजा	०६
०४.	हरिभक्त का महिमागान	०८
०५.	संतनो क्रोध	१०
०६.	श्रीहरि के सत्संग के सत्य स्वरुप को समझना	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०८.	सत्संग बालवाटिका	१५
०९.	भक्ति सुधा	१७
१०.	सत्संग समाचार	२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

बरसात पूर्ण होने को था, और भाद्रपद के श्राद्ध पक्ष में असह्य गर्मी भी पड़ रही थी, फिर भी कहीं बादल दिखाई नहीं दे रहे थे। उसी सयम एकाएक समग्र गुजरात में मुशलाधार बरसात होने लगा, इससे करीब-करीब सभी डेम छलका गये। किसानों को नुकशान भी हुआ। फिर भी पानी की कहीं कोई तकलीफ नहीं रही। परमात्मा जब कृपा करते है तब कल्पना के बाहर होता है। भगवान की लीला का कोई पार नहीं है। भगवान जैसे तो भगवान ही है। अपने सर्वोपरि इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तो सभी के कर्ता हर्ता तथा जीव मात्र की रक्षा करने वाले है। हमे भगवान की इच्छा के अनुसार रहने में ही सुख है।

वचनामृत ग.अन्य-१३ में भगवानने कहा है कि - जब हम तन, मन, धन सब कुछ भगवान को अर्पण कर देते है तब उन्हीं की इच्छा में अपना प्रारब्धहै। इसलिये भगवान की इच्छा से चाहे जितना भी सुख दुःख आवे उसमें घबडाना नहीं चाहिए। भगवान जिसमें प्रसन्न उसी में अपनी प्रसन्नता माननी चाहिए। भगवान में जिसे दृढ प्रीति तथा भक्ति है वह भक्त कभी भी धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति का त्याग नहीं करता उसी से भगवान उस भक्त की रक्षा करते है। कभी ऐसा होता है कि देश-काल की विषम स्थिति में धर्मादिक ष्ठ में बाहर से कमी दिखाई देती हो लेकिन अन्तर में धर्मादिक का भंग नहीं होता। इस वात को सदा ध्यान रखकर सदा इसका अनुसंधान करते रहना चाहिए।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१३)

१०-११ अमेरिका से सीधे भुज सूखपर (कच्छ) पदार्पण।

१६ जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी के शोभायात्रा में पदार्पण।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा पदार्पण।

२३ लुणावाडा गाँव में पदार्पण।

२९ संतरामपुर (पंचमहाल) श्री हनुमानजी महाराज के शतामृत पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण.

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१३)

८ वेदांत इन्डस्ट्रीयल हब में एक हरिभक्त के यहाँ पदार्पण, नरोडा।

१६ अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा नारायणघाट मंदिर में श्री गणपतिजी के शोभायात्रा में पदार्पण।

ध्वजा

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

वैदिक तथा पौराणिक समय के शास्त्रों में से ध्वजा का उल्लेख मिलता है। वर्तमान समय में दो प्रकार से ध्वजा का उपयोग हो रहा है। देव मंदिरो में देवता के प्रतीक रुप में दूसरा राजा महाराज अपनी पहचान के रुप में ध्वजा का उपयोग करते है।

धार्मिक ध्वजा के विषय में अलग-अलग शास्त्रो में खूब महत्व बताया गया है। शिल्प शास्त्र में मंदिर को भगवान का स्थूल रुप बताया गया है इसलिये ध्वजा को शिखा का रुप माना जाता है। मंदिर की पूर्णता ध्वजा की प्रतिष्ठा के बाद होती है। इसके अलांवा देव मंदिरकी ध्वजा को देव-देवीका प्रतीक मानकर पूजन होता है। इसलिये कि देव-देवी के प्रत्यक्ष दर्शन न होने पर ध्वजा के दर्शन से मूर्ति के दर्शन का लाभ मिलता है। जिस तरह मूर्ति प्रतिष्ठा होती है उसी तरह ध्वजा की प्रतिष्ठा होती है। इससे ध्वजा में भी वही उर्जा शक्ति होती है। इसलिये ध्वजा की परछाई को भी अलभ्य माना जाता है. सूतक इत्यादि में मूर्ति दर्शन का अधिकार न होने से ध्वजा का दर्शन करने से फल मिलता है।

ध्वजा को सफलता की सिद्धि मानी जाती है। ध्वजा की वन्दना करने वालों की निश्चित सिद्धि होती है। मंदिर में ध्वजा चढाने वाले की विजय होती है। अर्थात् जिसकी विजय होती है उसीको इसका लाभ मिलता है। मूर्ति प्रतिष्ठा विधिमें आचार्य त्रिविक्रमाचार्य का मत है कि ध्वजा चढाने वाले को ध्वजा में जितने तन्तु है उतने हजार वर्ष तक स्वर्ग में निवास मिलता है।

ध्वजा जिसमें लगायी जाती है उसे ध्वजदंड कहते हैं। उस दंड के नीचे ध्वजा पुरुष की मूर्ति होनी चाहिए, दंड लकडी का होना चाहिए जिसमें वांस, खैर, सीसम, अर्जुन, महुवा, तांबा, पीतल, सुवर्णादि धातु से मढा होना चाहिए. उसकी लंबाई गर्भ गृह के बराबर की होनी चाहिए। उसे शिल्प शास्त्र में उत्तम कहा गया है।

नैऋत्य में भगवान के दक्षिण हाथ में ध्वजा रखने का शास्त्र मत है। ६, ८, ९, १०, १२, १४ हाथ जितनी लंबाई वाला ध्वजदंड मान्य है। दंड भीतर से पोलवाला नहीं होना चाहिए।

देव-देवी के मंदिर पर ध्वजा की विविधता देखने में मिलती है। वही उस मंदिर की पहचान है। उस में भी देवी के मंदिर की ध्वजा लाल (केसरी) शिव तथा रुद्रावतार स्वरुपों की लाल, विष्णु के स्वरुपों की सफेद, मस्जिद के ऊपर हरे रंग की ध्वजा होती है। ध्वजा एक रंग, दो रंग, तीन रंग तथा पांच रंग की हो सकती है। विश्व में कुल तेरह धर्म माने जाते हैं। वे सभी अपने-अपने परम्परा के अनुसार अलग-अलग ध्वजा को मानते है। पूजन करते हैं और आदर भाव रखते हैं।

ध्वजा का माप कितना होना चाहिए ? शिल्प शास्त्र में ध्वजा की लम्बाई-चौड़ाई का प्रमाण - दंड की लंबाई के बराबर ध्वजा की लंबाई तथा आठवें भाग की चौडाई होनी चाहिए। इसके लिए अन्य आचार्यो का अलग-अलग मत है।

(१) ध्वजा के चौथे भाग का दो हाथ की लंबाई तीन हाथ की लंबाई, आकार में त्रिकोण तथा लंब चौरस आकारका होना चाहिए। इसके अलांवा डबल त्रिकोण भी मान्य है, जिसमें चोड़ाई की अपेक्षा लंबाई दो गुनी अधिक होनी चाहिए।

ध्वजा कपास सूत की पवित्र मानी जाती है। रासायनिक कपडे से बनी ध्वजा का निषेधकिया गया है

।इस लिये कि देवी-देवता का आहूवान किया जाता है।

अपने अमदावाद तथा वडताल देश के शिखरी मदिरों में अलग-अलग ध्वजा देखने में मिलती है । इसका कारण शास्त्रोक्त है । वह जानने लायक है । वडताल प्रदेश में मंदिरों में लक्ष्मीनारायण की मूर्ति प्रधान रुप में होती है।इसलिये लक्ष्मीजी का प्रतीक लाल रंग है तथा नरनारायण का रंग सफेद है इन दोनो के प्रतीक रुप में लाल-सफेद पट्टावाली ध्वजा चढाई जाती है। अमदावदा देश में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति प्रधान स्वरुप में रहती है - जिससे सफेद ध्वजा में हनुमानजी की मूर्ति लाल रंग की रखी जाती है। इस विषय में महा भारत आदि पर्व में यह कथा आई है कि पांडव अपने पूर्वजो के उद्धार के किये एक यज्ञ का आयोजन किये। जिसमें सोने की अधिक मात्रा में जरुरत थी। उस समय भगवान कृष्ण और अर्जन सोना लेने के लिये लंका गये । समुद्र के किनारे आये, जहाँ पर भगवान हनुमानजी वृद्धरुप में समुद्र सेतु की रक्षा कर रहे थे । श्रीकृष्ण अर्जुन को हनुमानजी सामान्य व्यक्ति समझकर सेतुपर जाते समय रोके । यह देखकर अर्जुन बाण का पुल बनाने लगे। उस पुल को हनुमानजी तोड़ डाले। वारंवार ऐसा होता रहा, दोनो में संघर्ष हो गया। भगवान श्रीकृष्ण दोनो की मध्यस्थता कतरे हुए प्रतिज्ञा करवाये कि अब यदि अर्जुन के बनाये बाण के पुल को आप तोड़ देंगे तो अर्जुन को आपका दास बनना पड़ेगा, यदि हनुमानजी नहीं तोड सके तो हनुमानजी को अर्जुन का दास बनना पडेगा। अब भगवान अपने भक्त अर्जुन का पक्ष रखने के लिये पुल के नीचे सुदर्शन चक्र रख दिये । बाद में हनुमानजी उस पुल को तोड़ने में समर्थ नहीं हो शके । हनुमानजीने दिव्य दृष्टि से देखा तो श्रीकृष्ण में श्रीरामजी का दर्शन हुआ। हुमानजी चरण में गिर पडे। क्षमा मांगे। प्रार्थना करते हुए कहे कि हे प्रभो ! में आपको पहचान नहीं सका। मैं वचन से बधगया हूँ। आप का तथा अर्जुन का सेवक बनकर रक्षा करुंगा । उस समय भगवान श्रीकृष्णाने हनुमानजी को ध्वजा में रहकर रक्षा करने की आज्ञा की इसलिये महा भारत के युद्ध के समय अर्जुन के ध्वजा में रहकर रक्षा करते रहे। अपनी गदा से शत्रुओं के प्रहार से अर्जुन के रथ की रक्षा करते । उसी समय से भगवान श्रीकृष्ण तथा अर्जुन जहाँ रहते हैं वहाँ पर वहाँ के मंदिर की रक्षा करते रहते हैं।

इस शास्त्र की परंपरा का ध्यान रखकर अमदावाद श्री नरनारायणदेव - श्रीकृष्ण अर्जुन के रुप में विराजमान है। शिक्षापत्री श्लोक ११० में लिखा है कि जहाँ पर अर्जुन तथा श्रीकृष्ण हो वहाँ नरनारायण के रुप में जानना। ध्वजा में हनुमानजी को सूत के कपड़े में मूर्ति का रुप देकर उसकी प्रथिष्ठा करके, हनुमानजी का आह्वान करके शिखर के ऊपर चढाया जाता है। यही परंपरा सभी मंदिरो में देखी जाती है। जहाँ पर वह परंपरा न हो वहाँ ऐसी परंपरा रखनी आवश्यक है। हनुमानजी अपनी गदा से उसकी अवश्य रक्षा करेंगे। जब मंदिर की मरम्मत करानी हो तो हनुमानजी की प्रार्थना करके पूजन करके आगे का कार्य करना चाहिये, अन्यथा वे भुक्का बोला देगे । कितने देव-देवियों के मंदिरकी ध्वजा में त्रिशूल, ॐ, स्वस्तिक अथवा उन देवताओं के आयुधभी रखे जाते हैं। यह भी शास्त्र सम्मत है। जैसे विष्णु की ध्वजा में गरुडजी, शिव की ध्वजा में वृषभ, ब्रह्मा में हंस, वरुण, क्रौंच, इन्द्र, हाथी, अग्निमेष, सूर्य-अश्व दुर्गा, सिंह, गणेश-मूषक, कुबेर-नर, वायु-मृग, सरस्वती-हंस, लक्ष्मी-कमल इत्यादि ध्वजा में रखे जाते हैं।

ध्वजा बदलने का समय विजयादशमी, वार्षिक पाटोत्सव, वर्ष के आरंभ में, खंडित होने पर मास के

पेईज नं. ९

श्री स्वामिनारायण

हरिभक्त का महिमागान

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (मेमनगर-अहमदाबाद)

''हरिभक्त'' अर्थात् सत्संग की मूल इकाई । जिस प्रकार ईंट और पत्थर से मकान बनता है । उसी प्रकार समूह सत्संग का निर्माण करता है । बहन हो या भाई त्यागी हो या गृहस्थ, साधु हो या ब्रह्मचारी या सांख्ययोगी यह सभी हरिभक्त ही है।

सत्संग के प्रत्येक अंग को जोडने की आवश्यकता रहती है। भगवान भक्त के बगैर सूने है। ''जहाँ-जहाँ मेरे भक्त रहते है, मेरा भजन व कीर्तन करते हैं वहाँ पर मै बसता हूँ।'' श्रीहरिने अपना निवास स्थान बना दिया है। भक्तो को भी सच्चा भक्त बनकर रहना चाहिए और यदि ठग बनकर अपने आपको या भगवान को या भक्तजनो को बेवकूफ बनाता है तो वह जगत के जीवो से भी खराब है।

जिस प्रकार भक्त के बगैर भगवान को कल्पना नहीं कर सकते । उसी प्रकार एक भक्त के बगैर दूसरा भक्त भी अधूरा है। मंदिर की स्थापना के पीछे श्रीहरि का हेतु यही था कि मेरे भक्त नित्य मंदिर में आये, एक-दूसरे से आत्मियता रखे और सत्संग का प्रचार-प्रसार हो मंदिर सत्संग के उत्थान का केन्द्र है।

काल और समय से जब मंदिर जीर्ण होता है तब पुनरुत्थान अवश्य करना चाहिए । आखिर भगवान के निवास स्थान को सुंदर बनाना भक्त की जिम्मेदारी है। भगवान भी चाहते हैं कि उनके भक्त दूर-दूर से दर्श; करने आये । भक्त के लिए वे उसी प्रकार सुविधा प्रदान करते है जिस प्रकार एक पिता अपने बच्चो के सुख के बारे में सोचता है।

अपने मंदिरो में नित्य और निष्ठापूर्वक दर्शन करने वालो की भीड रहती है । और उसमे भी पूर्णिमा, एकादशी और उत्सव के अवसर पर दर्शन करने आते है। ऐसे समय में भक्त की परीक्षा होती है । मंदिर में लोग थाल, प्रसाद और महापूजा के लिए भेट पहुंचाते है । भगवान के लिए भी भेंद आवश्यक है। जब कोठार में सेवा करने वाला भक्त आने वाले भक्त को ''जय स्वामिनारायण'' कह कर स्वागत करता है तब कितना सुंदर वातावरण का निर्माण होता है।

उसी प्रकार प्रतिदिन या महोत्सव के दौरान सेवा

करने वाले भक्तो की बातो को आदरपूर्वक मानना चाहिए, ऐसे वक्त पर अपने मान-सम्मान छोडकर एक भक्त जैसा आचरण करना चाहिए । यदि वाहन बाहर रखने को कहे तो बाहर रखना और चलते दर्शन करने जाना चाहिए।

आज प्रचार-प्रसार के माध्यम के कारण समग्र विश्व एक छोटा सा स्थल बन गया है । रोज श्रीहरि के दर्शन Live कर सकते है । तब मंदिर की शोभा बढाने के लिए हम सभी को प्रयास करना है । भक्तो को श्रद्धावान बनना है और ईर्ष्या का त्याग करना है।

सच्चे हरिभक्त का यही लक्षण है कि वह सभी का दास बनकर रहता है । जो सेवा मिले वह निष्ठापूर्वक करता है।

अपने आग्रह को छोड प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री या संनिष्ठ संतो के आग्रह को आज्ञा मानकर उसी प्रकार वर्तन करे ।

''निष्कामभाव'' और ''निर्मलता'' यह हरिभक्त का मुख्य गुण है । इससे वह जितना चाहे उतना ऊपर उठ सकता है।

मंदिर को चलाने वाले भी तो हरिभक्त है । प्रभु के लिए तो सभी सेवक है । हम मूल प्रणाली के सेवक है जो अपनी धरोहर को संभाल रहे है । और हम हमारे नजदीक के सभी हरिभक्तो के सेवक है।

श्रद्धावान रहने से श्रीहरि की महिमा जैसी था वैसी समझ में आती है । ईर्ष्या से मुक्त रहने से सत्संग के प्रति दिव्यता बढती है । सभी हरिभक्तो को अपने परिवार का हिस्सा समझना चाहिए।

जो श्रध्धा वाला है वह सच्चा हरिभक्त है और जो ईर्ष्या से मुक्त है वह पक्का भक्त है।

प्रत्येक भक्त अपना समझकर उसकी सुख सुविधा और सत्संग का ख्याल रखे यही सच्चा महिमागान है । हरिभक्तो का।

अनु. पेईज नं. ७ से आगे

प्रथम दिन, स्वरुप के जन्मोत्सव पर, किसी विशिष्ट पर्व पर, पुराने ध्वजा को विसर्जित करके नूतन ध्वजा की प्रतिष्ठा करके स्थापित किया जाता है । डाकोर द्वारिकादि मंदिरो में नित्य ध्वजा चढाई जाती है । पदयात्री पैदल-चलकर मंदिर में ध्वजा चढाते हैं । जिसे सम्पूर्ण शरणागति का प्रतीक माना जाता है।

पहले के समय में राजा महाराजा के रथ के ऊपर, घोडा, हाथी, पालकी, किला, राजमहल, कोठी, मुख्य द्वार पर अपनी पहचान कराने वाले ध्वजा को रखते थे । आज के समय में विश्व के ६९६ देश अपने साम्राज्य के प्रतीकरुप में नाना प्रकार के ध्वज रखते हैं । उसकी मर्यादा भी रखी जाती है । अपने देश का त्रिरंगी ध्वजा में लाल रंग शौर्य का, सफेद रंग शांति का, नीला रंग प्रगति का प्रतीक तथा बीच में २४ पट्टी का अशोक चक्र अखंडित अनुशासन को प्रदर्शित करता है । अपने देश में प्रत्येक २६ जनवरी तथा १५ अगस्त को ध्वज वंदन किया जाता है । प्रत्येक नागरिक को स्वाभिमान पूर्वक ऊपर के पर्व में ध्ववंदन करना चाहिए । अब तो केवल विद्यालय तथा शासन में ध्वज वंदन होता है । त्यौहार के समय दरवाजे पर तोरण बांधा जाता है, यह भी विजय का प्रतीक है।

जिस मंदिर या शासक की ध्वजा के नियम का सुंदर ढंग से पालन किया जाता है । उसका साम्राज्य सुरक्षित रहता है । जिस मंदिर की ध्वजा में क्षति होती है, ध्वजा में लापरवाही होती है उस मंदिर की या उसके अनुयायियों की दुदर्शा होती है।

संतनो क्रोध

- चंद्रकान्त पाठक
(गांधीनगर)

सांकरी गाँव के बाहर बावली का किनारा बनाने का कार्य तीन बढई कर रहे थे । बहुत समय तक परिश्रम किये, थक गये तो किनारे पर बैठकर हवा खा रहे थे, उसी समय उन सभी की दृष्टि सामने एक बगीचे में बैठे तीन साधुओं पर पडी ।

एक साधु दूसरे साधु के मस्तक पर कुल्हाडी मार दी और वह लहु लुहान हो गया । उन तीन बढई में एक ने कहा कि देखो तो साधु को अपनी क्रोधपर काबू नहीं है । साधु बनने की इन मे पात्रता ही नही है । साधु को क्रोधकैसा ?

दूसरे बढई ने कहा मैं उन्हें पहचानता हूँ । वे मुक्तानंदजी के गुरु है ।

जिसे कुह्राडी मारे थे वह स्वयं अपनी धोती में से चीर कारण कर - जमीन के ऊपर से धूल लेकर माथे में कपडे से बांधदी । बहता खून बन्द हो गया । बाद में उस साधु पर प्रसन्न होकर मस्तक पर हाथ रखते हुए अपने अन्तर का भाव व्यक्त किये ।

साधु का क्रोधभी कल्याण कारी होता है । भगवान श्रीहरि कहते हैं कि इस तरह करना पड़े तो करना आवश्यक होता है, इससे साधुओं की दैनिक क्रिया नीतिरीति नियम सभी के सहायक होता है । कभी-कभी क्रोधभी करना चाहिये । साधु को मारने वाले रामानंद स्वामी थे ।

मारने का कारण क्या था ?

प्रातः कालीन दैनिक कृत्य सम्पन्न करके रामानंद स्वामी कहे कि आप दो साधु गाँव में भीक्षा मांगने जाइयें । जो मिले वह ले आइये । उसे ठाकुरजी को अर्पण करेंगे । साधु भीक्षा मांगने गाँव में गये । उस में से एक साधु गांव में किसी किसान के यहाँ गया था । घर में कोई पुरुष वर्ग नहीं था ''नारायण हरे, सच्चिदानंद प्रभु'' ऐसा कहकर भीक्षा मांगे । बहन बाहर आकर देखी तो ए रामानंद स्वामी के शिष्य है । रामानंद स्वामी भगवान तरह समझ हैं । ऐसा कहने वाले बहुतो के मुख से सुना गया है । भगवान श्रीकृष्ण के सेवक हैं । जिसके गुरु महान हों उनके शिष्य भी सामान्य तो हो ही नहीं सकता । गुरु के गुण शिष्य में आते हैं । समाज के सुधारक होते हैं। लोगो को सत्मार्ग पर लेजाते हैं । ऐसा विचार करते हुए वह बहन घर में भोजन पूर्ण हो गया था, मात्र एक रोटी बनी थी, वही एक रोटी लेकर बाहर आयी और कहने लगी कि आधे रोटी में आपको देती हूं आधी रोटी में अपने लिये रखती हूं । फिर विचार आया कि साधु दूसरे घर भी पाजेंयगे, में इस में से चौथा भाग देती हूँ । रोटी का टुकडा करते समय पुनः विचार आया कि नहीं आधी रोटी देना ही ठीक रहेगा, मैं अपने लिये थोडा बना लूंगी ।

समर्थ साधु थे । दूसरों के भीतर की वात जानने वाले थे । बहन को भीतर से बाहर आने से समय लगी । इस लिये संत ने कहा कि अरे बहन ! आधी रोटी या चौथे भाग की रोटी देने का विचार मत करो, हम तीन लोग है, हमें पूरी रोटी दे दो । बहन को बड़ा आश्चर्य हुआ, ये साधु तो मेरे भीतर की भी बात जान लियें । बहन पुरी रोटी साधु के झोली में डाल दीं ।

रामानंद स्वामी के पास आकर पूरी बात बतादी,

स्वामी यह सुनकर साधु के मस्तक पर कुल्हाडी मार दिये । साधु लोही लुहान हो गया ।

तीनो बढई स्वामी के पास गये, स्वामी का चरण स्पर्श करके कहने लगे कि स्वामीजी ? इस साधु को बिना कारण के कुल्हाडी क्यो मार दिये ।

स्वामीने कहा, यह साधु गाँव में भिक्षा मांगने गया था वहाँ एक पटेल के घर अपना सामर्थ्य का दुरुपयोग किया, उस घर में पुरुष वर्ग कोई नहीं था, केवल वह महिला ही थी । उसके मन के संकल्प को बताकर उससे पूरी रोटी मांग लाया । हमारे यहाँ भिक्षा में जो मिले उसे लेलेना होता है । साधु पूरी रोटी मांग कर अपनी मर्यादा का उल्लंधन किया है । इसलिये मैंने उसे दंड दिया है ।

यह वात सुनकर तीनो बढई स्वामी के चरण में गिर पडे । इसके बाद वहाँ से अपने काम पर वापस चले गये ।

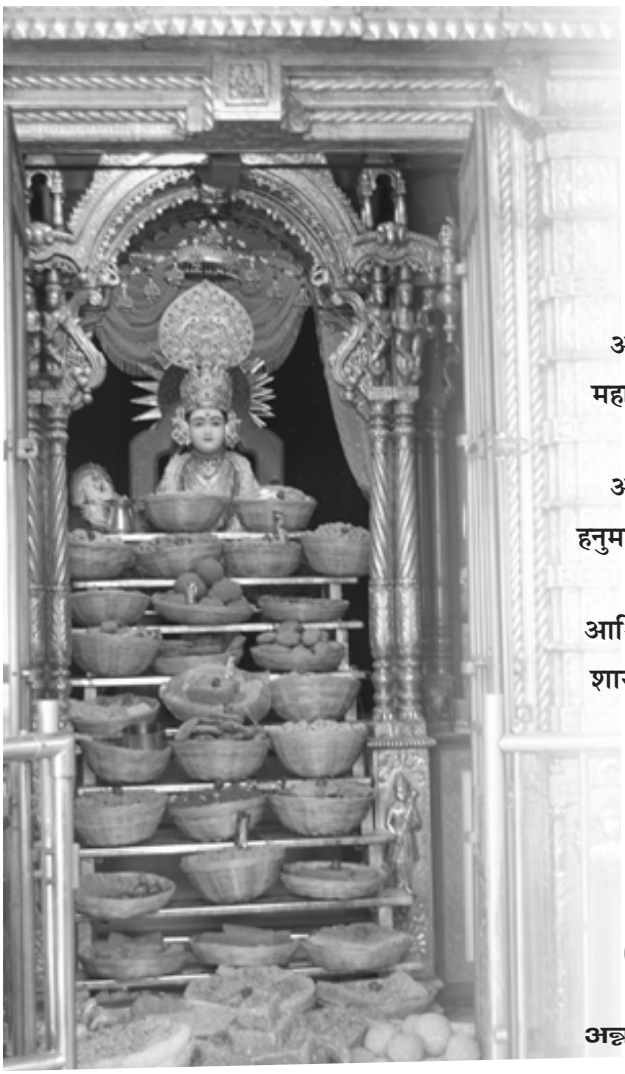

दीपोत्सवी कार्यक्रम

: धनतरेस :

आश्विन कृष्ण-१३ शुक्रवार ता. १-११-२०१३

महालक्ष्मी पूजन सायंकाल ६-०० से ८-३० बजे ।

: काली चौदश :

आश्विन कृष्ण-१४ शनिवार ता. २-११-२०१३

हनुमानजी महाराज का पूजन सायंकाल ५-०० बजे ।

: दीपावली :

आश्विन कृष्ण-३० रविवार ता. ३-११-२०१३ समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन सायंकाल ६-३० बजे ।

: नूतन वर्ष :

सं. २०७० : कार्तिक शुक्ल-१

सोमवार ता. ४-११-२०१३

मंगला आरती प्रातः ५-00 बजे ।

शृंगार आरती प्रातः ६-३0 बजे ।

(सुवह ९-३0 से १२-00 दर्शन बंद रहेगा)

राजभोग आरती प्रातः १२-00 बजे ।

अन्नकूट दर्शन दोपहर १२-00 बजे से ३-३0 बजे तक ।

श्रीहरि के सत्संग के सत्य स्वरुप को समझना

- पटेल गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)

धर्मवंशि को प्रबल प्रतापा, दे उपदेश मिटावत पापा ॥
जब शरणागत होवत जंता, ताहि मिलावत श्री भगवंता ॥
धर्मवंश जश अति सुखकारी, सुनत पुनित होत नरनारी ॥
पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण मुरारी, तेहि रीझत प्रभु भवभयहारी ॥
धर्मवंश के विप्र हे जोई, प्राकृत मनुष्य के सम नहि सोई ॥
धर्म वृद्धि हित द्विज भयं देवा, करन् श्रीकृष्ण देव की सेवा ॥
मुक्तानंदके प्रभु सुख दाता, धर्मवंश कियो पृष्ट अपारा ॥

अनंत कोटी ब्रह्मांड में से हम किसी एक ब्रह्मांड में रहते हैं । यह ब्रह्मांड का मतलब मृत्युलोक, उसमें भी जम्बू द्विप, उस में भी नवखंडो में भतर खंड, जिस में हम रहते है। इस में भी सद्गुरु का मिलना अति दुर्लभ है। श्री भाग. स्कन्ध-११. अ.५ श्लोक २९ में कहा है। उसमें भी भगवान के भक्तों का दर्शन अति दुर्लभ बताया गया है। संसार में सद्गुरु, सत्पुरुष, संत तथा हरिभक्तों का समागम मिले तो समझना चाहिये कि जीवने बहुत पुण्य किया होगा । क्योंकि मोक्ष प्राप्ति के लिये धर्म, ज्ञान, वैराग्य के साथ यदि भक्ति की जाय तो सद्गुरु की प्राप्ति होती है । स.गु. निष्कुलानंद स्वामी, स.गु. मुक्तानंद स्वामी, दादा खाचर, सुन्दरभाई, पर्वतभाई का कल्याण सहजानंद स्वामी जो अपने इष्टदेव तथा दीक्षा गुरु है - परब्रह्म परमात्मा है । वही सत्संगी मात्र के गुरु है । इसलिये हम बडे भाग्यशाली हैं। उन्हीं महाप्रभु के वंश में उत्पन्न आचार्यों के चरण में रहने का योग मिला है । सत्संगी मा-बाप के घर जन्म लेने से यह योग मिला है। इसलिये धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की महिमा समझकर सत्संग करेंगे तो सहजानंद स्वामी हमें सुख प्रदान करेंगे।

श्री स्वामिनारायण श्री स्वामिनारायण स्मरी अविनाशी फल लेंवुजी । मनगमतुं मेली मनवा हरिना गमतामां हरवुं फरवुं जी। देह धर्यो ते दुःख सुख आवे, ते हरिना नाम साथे वेढी लेवुंजी धर्मवंशी आचार्य - संत पर हेत करीने सहजानंद पुरुषोत्तम भजवाजी।

गोवर्धन कहे भक्ति मां विघ्न करे तेने वेरी मानी तजवा जी ।
शिक्षापत्री आज्ञा में रही हरि भजी करों जीवन सफल जी ॥

शिक्षापत्री श्लोक-३, ६२, १०८, ११६, ७१ में प्रभु ने जो आज्ञा की है - आचार्य की अन्न-वस्त्र धन इत्यादि से पूजा करना तथा किसी प्राणी, जीव जंतु या हरिभक्त, संत का द्रोह नही करना - तभी अक्षरधाम की प्राप्ति होगी।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

स्वस्ति श्रीमती लक्ष्मीपुरे महाशुभ स्थाने बिराजमान उत्तमोत्तम परम पूज्यपाद धर्मवंश भूषण आचार्य प्रवर आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी हरिकृष्ण महाराज एतान श्री वरताल थी लि. साधु गोपालानंदना साष्टांग प्रणाम सहस्त्र सेवामां अंगीकार करजो । अपरंच लखवा कारण एम छे जे अमारे तो दोलोत्सव करी तुरत अमदावाद आववानो विचार हतो तथा पि अमे आव्या मोरथी ज डुंगरपुरथी मूर्तियो आवी त्यारे आनंद स्वामीए तथा अक्षरानंद स्वामीए गढडे रघुवीरजी ऊपर कागड़ लख्यो तो पछे एमनो समाचार पत्र आव्यो जे अमारे फागण वद-११ ने दिवसे वरताल मूर्ति पधरावववी छे माटे गोपालानंद स्वामीने वरताले राखजो । पछे ए समाचार अमे सांभळ्या ने अमन आनंद स्वामी ए अक्षरानंद स्वामी ए घणी ताण करीने कह्युं जे तमारे तो हवे अहीं रहेवुं जोइशे केम जे धोलरे मूर्ति परधावे छे ते तो श्रीजी महाराजने हाथ स्पर्श करीने आवेली छे ने आ मूर्ति तो नवी छे तेनुं स्थापन करवुं छे तेमा तमारे रयुं जोइये । ने रघुवीरजी ने तथा नित्यानंद स्वामीने पण अमने सरख्यानी गणी ताण जणाणी ते सारुं अमे अत्र रह्या छै ये । ते एकादशी ने दिवसे प्रतिष्ठा करीने द्वादशी ने दिवस अत्रथी निकलसुं ते तम्हारे त्यां आवशुं ने जेम तमे कहेशो तेम करशुं बीजुं भाई श्री रामप्रतापजी महाराजने मारा घणेमाने प्रणाम केजो तथा सर्वज्ञानंद स्वामि आदि साधु ने अमारा नारायण केजो । संवत १८८७ ना फागण वदी-२ लेखक शुकमुनि ना साष्टांग प्रणाम सेवा मा कबुल करजो ।

आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी हरिकृष्ण महाराजने पत्र पहोंचे श्री अमदावादनो छे।

समर्थ संत श्री गोपालानंद स्वामी ए आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ऊपर शुकानंद स्वामी द्वारा लखावेल यह पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम में सभी हरिभक्तों के दर्शनार्थ होल नं. ९ में रखा गया है। इन हस्ताक्षरों के दर्शन मात्र से आत्यंतिक कल्याण होगा। हरिभक्त इसका लाभ अवश्य लें।

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।
मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**
नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अगस्त-२०१३

रु. १००००० /-	अ.सौ. धुलीबेन दशरथभाई पटेल मोखासम कृते योगेशभाई तथा जयेशभाई वर्तमान यु.एस.ए.
रु. ५०१०५ /-	समस्त हरिभक्त श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम (यु.के.)
रु. ३००११ /-	प.भ.अ.नि. गंगदासभाई बेचरदास चोटलिया लेस्टर (यु.के.) कृते कंचनबहन चोटलीया
रु. १५००० /-	प.भ. किरीटभाई पेटल स्ट्रेधाम (यु.के.)
रु. १४००० /-	जीमेश अश्विनभाई सोनी (बी.इ. कोम्प्युटर), राणीप
रु. १३३०० /-	पूजा बहन कानुगा हालार (न्युजर्सी)
रु. ११००० /-	धीरजभाई के. पटेल - सोला रोड
रु. ११११११ /-	अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब के ११० वें जन्मोत्सव निमित पर । प्रेरक अ.नि.प.भ. श्री नंदलालभाई भायचंदभाई कोठारी वर्तमान प्रबोधभाई छगनलाल झाला
रु. ५५५५ /-	रमेशभाई अंबालाल पटेल - साबरमती
रु. ५००१ /-	सुशीलाबहन मनहरलाल पटेल - बापुनगर
रु. ५००१ /-	सोनी चुनीलाल दुर्लभजी - राणीप, विजयभाई तथा भावनबहना को ग्रीनकार्ड प्राप्त करने के निमित्त पर
रु. ५००० /-	सोक्रेटीस ईन्स्टीट्युड़ डॉ. डी. वी. देवाजी - वस्त्रापुर
रु. ५००० /-	घनश्याम एन्जीनीयरींग वर्तमान, मीनाबहन के. जोषी - बोपल

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रत्येक पूनम को ११-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री आरती उतारते है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अगस्त-२०१३)

ता. ९-९-१३ प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में गणपति पूजन कृते नरेशभाई ईश्वरभाई पटेल, नारणपुरा ।

ता. १५-९-१३ (प्रात:) वासुदेवभाई लवजीभाई पटेल, नारणपुरा कृते धर्मेशभाई

(सायंकाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर कार्डिफ के पाटोत्सव प्रसंग पर कृते नारणभाई लालजीभाई हीराभाई तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ।

ता. २४-९-१३ पूनमभाई मगनभाई पटेल, नवरंगपुरा ।

ता. २९-९-१३ प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी की प्रेरणा से सां.यो. बाबुबा ।

श्री हनुमानजी महाराज का पूजन

श्रीजी महाराज की आज्ञानुसार काली चौदश को श्री हनुमानजी महाराज का पूजन तथा अभिषेक श्री स्वामिनारायण म्युजियममें ता. २-११-१३ को शनिवार प्रात: ८-०० से ११-३० तक पूजन का कार्यक्रम रखा गया है । पूजन का लाभ लेने के लिये कोई भी हरिभक्त ११००/- रुपये भरकर नाम अंकित कर सकते हैं । पूजा में दम्पती को लाभ मिलेगा । पूजन के बाद सभी को भोजन का प्रसाद भी मिलेगा ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम : फोन : २७४८९५९७ मो.नं. : ९९२५०४२६८६.

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए ।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी
(गांधीनगर)

अपने इग्यारह नियम

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

(गतांक से चालू)

प्रिय भक्तों ! संप्रदा यमें आश्रित सायंकाल को जो पद का गायन करते है - ''निर्विकल्प उत्तम अति'' इस पद में प्रेमानंद स्वामी ने जो इग्यार नियम वर्णन किये है - उसका हम विस्तार पूर्वक अर्थघटन कर रहे है। अभी तक सात नियम के अर्थ को समझे है, अब आगे आठवें नियम को लिख रहे है - कलंक न कोई कुं लगातः।

प्रेमानंद स्वामीने ''निर्विकल्प उत्तम अति'' इस पद में उपरोक्त पद का गुम्फन करके सभी को किसी विशेष पाप से बचाने का प्रयास किया है। स्वामिनारायण भगवानने भी वाणी से होने वाले पाप से बचने को कहा है। शरीर से ही पाप नहीं होता, वाणी से भी पाप होता है। स्वार्थ की वात हो या न हो, जो वात आप नही जानते हो, उसमें अटकर बच्चे लगाने की क्या जरुरत ? उस कलंक या आरोप से पांच महापाप से अधिक पाप लगता है।

पांच महापाप का प्रायश्चित शास्त्र में लिखा हुआ है, लेकिन किसी पर झूठा कलंक या आरोप लगाने वाले का कोई प्रायश्चित नहीं है। मिथ्या कलंक बहुत भयंकर पाप है। किसी पर अज्ञान में भी झूठा आरोप लगाने वाले को कहीं न कहीं से पाप आकर धरदबोचेगा।

संत परंपरा में अपने संत एक दृष्टांत देते हैं - चार ब्राह्मण काशी पढकर वापस आरहे थे। सभी विद्वान हो गये थे। उस जमाने में ब्राह्मण को जब सामने से कोई आते देखता तो संमान के साथ उसे बुलाता। अपने घर ले जाता और भौजन कराता। संयोग से उसी समय गाँव से बाहर कोई सद्गृहस्थ इन चार ब्राह्मणो को आते देखा तो पूछा कि, आप सभी कहां से आ रहे हैं ? काशी से पढकर आ रहे हैं। अच्छा। आप सभी आज रात यहाँ विश्राम कीजिये।

हमारे यहाँ भोजन प्रसाद लीजिये, उन ब्राह्मणों ने वैसा ही किया। वे सभी तालाब के किनारे रहने का निश्चय किया।

सद्गृहस्थ के घर से राशन आया। वहीं तालाब के किनारे भोजन बना, सभी भोजन किये, संयोग से चारों की मृत्यु हो गयी। यमराज के यहाँ लेखा जोखा साफ होता है। सभी के कर्म का लेख एकदम स्पष्ट होता है। चार ब्राह्मणों की एक साथ मृत्यु कैसे ? यमराज तत्काल इसकी स्पष्टता के लिये अपने अनुचारों को भेंजे। सद् गृहस्थ का इस में कोई दोष नहीं था, उसने तो रासन दे दिया। लेकिन ब्राह्मण जिसवृक्ष के नीचे भोजन बना रहे थे उस वृक्ष पर चील पक्षी एक मरे सर्प को लेकर खा रही थी। उस सर्प के मुख से विष भोजन के ऊपर गिर रहा था। इसकी ब्राहमणों को खबर नहीं हुई। वे लोग अज्ञानता में भोजन कर लिये। प्रश्न यह है कि ब्राह्मणों के हत्या का दोष किसे लगे। चारो ब्राह्मणों की अकालमृत्यु हुई है। यमराज बड़ी चिन्ता में पड़ गये।

चिन्तित यमराज भोलानाथ के पास जाकर यही प्रश्न पूछते हैं ? महादेव भी प्रश्न का समाधान नहीं कर पाये तो दोनो भगवान विष्णु के पास जाते हैं। अब भगवान विष्णु महादेव तथा ब्रह्मा तीनो एकत्रित होते हैं प्रश्न के समाधान का चिन्तन करते है, बाद में तीनो जिस स्थल पर घटना घटी थी वहाँ जाते हैं। मनुष्य का

रुप धारण करके मृत्युलोक में आये । चार ब्राह्मणों को लोग स्मशान में लेजाकर दाह कर्म कर रहे थे । तीनो देव उस दृश्य को सरीर देख रहे हैं । अग्नि संस्कार हो रहा है । स्मशान में आये व्यक्ति नाना प्रकार की वात कर रहे हैं । तीनो देव ध्यानपूर्वक सभी की वात सुनते हैं । एक कहता है कि आप जानते हैं ? वह गृहस्थी ऐसा है । क्यों, क्या हुआ ? यह आप को खबर नहीं पड़ेगी । ब्राह्मणों के साथ कुछ खराब सम्बन्धरहा होगा, जिससे सिद्धा में विष डालकर दिया होगा । मुझे खबर है, आप को नहीं, जान बूझ कर उस गृहस्थ ने किया है । यह सुनकर तीनो देवो यमराज से आकर कहते है कि ब्राह्मणो के हत्या का दोष (पाप) गृहस्थ के नाम लिख दीजिए ।

इसी को मिथ्या कलंक कहते हैं । यद्यपि कहने वाले को यह पता नहीं है कि उनकी मृत्यु कैसे हुई है, फिर भी जिसने सिद्धा दिया उसके ऊपर दोषारोपण करके कलंकित कर दिया गया । जिस वात को आप नहीं जानते हों उसे जानने जैसा कहना ही दोष है, वहीं कलंक है । इस कलंक से बड़ा कोई पाप नहीं है । विना प्रयोजन के पाप का भागीदार बनना पड़ा । कभी भी किसी को किसी झूठे कलंक से कलंकित नहीं करना चाहिए । पानी तथा वाणी दोनो को गार कर उपयोग में लाना चाहिए । पानी वस्त्र से गारा जाता है । वाणी विचार से गारी जाती है । विना विचारे यदि वाणी का उपयोग करते हैं तो सबसे बड़ा पाप लगता है ।

प्रिय भक्तो ! यह वात हमें नित्य याद रखनी चाहिए कि हमसे अज्ञान में भी किसी पर कलंक न लग जाय यह है बहुत छोटा, लेकिन किसी पर झूठा दोषारोपण करने से मत भेद, झगड़ा, विवाद, अन्तर्कलह इत्यादि होने की पूरी संभावना रहती है ।

इसलिये प्रेमानंद स्वामी ने लिखा कि ''निर्विकल्प'' इत्यादि इग्यारह नियम का बड़ी कड़ाई के साथ सभी सत्संगी पालन करे, इसी में सभी को सुख शान्ति मिलेगी ।(कलंक न कोई कुं लगता) ।

(क्रमशः)

दया के सागर श्रीहरि

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

एकबार श्रीजी महाराज संतो के साथ अमदावाद में पधारे यहाँ के हरिभक्तों के प्रेमाग्रह के वशीभूत होकर वे होली के अवसर पर पधारे थे । इस अवसर पर संत, ब्रह्मचारी तथा अनेकों गाँव से हजारों हरिभक्त पधारे थे । इस कार्यक्रम में एक सोनी अपने बेटे के साथ महाराज का दर्शन करने तथा उत्सव का लाभ लेने के लिये आया था । बालक छोटा था इसलिये अंगुली पकडकर चल रहा था । मंदिर में इतनी भीड़ थी कि बालक हाथ से छूट गया और कोई चोर उसे उठाले गया उसके पास २०० रुपये जितना गहना था उसे लेलिया और गला दबाकर मारडाला । इधर सोनी अपने बेटे को खोजने लगा । लेकिन बेटा मिला नहीं । वह रोते-रोते महाराज के पास आया । सम्पूर्ण वात महाराज को बता दी ।

महाराज उस सोनी को कहे कि देखो भाई तुम परेशानमत हो, तुम्हारा बेटा मिल जायेगा । लेकिन गहना नहीं मिलेगा । ऐसा कहकर भगुजी से कहेकि मशाल लेकर खंडहर की तरफ जाइये । भगुजी मशाल लेकर वहाँ पहुंचे तो बेटे को मारा देखकर वापस आकर कहने लगे कि - महाराज ! लड़के की तो मृत्यु हो गई है । श्रीहरिने कहा कि वह मूर्छित हो गया होगा । इसलिये उसे यहाँ ले आइये । उस बालक को लाकर उसके पिता से कहे कि इसे कपड़े में ढंक कर सुला दीजिये । प्रातः उठेगा । सभी ऐसा ही किये । प्रातः होते ही वह बालक उठ गया और बोलने लगा । इस तरह श्रीजी महाराजने अपने भक्त की रक्षा की । मित्रो ! भगवान भक्तवत्सल हैं । सदा रक्षा में तत्पर रहते हैं । लेकिन सतर्क रहकर प्रभु में आन्तरिक विश्वास तथा श्रध्धा होनी चाहिए । अपने जीवन के प्रति भी सतर्क रहना चाहिए, अन्यथा जिस तरह पिता के हाथ से बालक छूट गया और चोर उठा ले गया ।

इसी तरह आप भगवान के चरण का आश्रय छोड़ देंगे तो भगवान से बहुत दूर चले जायेंगे जगत के काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या इत्यादि चोर आपको उठा लेजायेंगे । उनके शिकार बनने में समय नहीं लगेगा ।

इसलिये भगवान बड़े दयालु है । यदि भगवान के हाथ को नहीं छोडेंगे तो वे स्वयं आपकी चिंता करेंगे । भगवान ने जो वरदान दिया है वे उसके अनुसार सभी की रक्षा करते हैं और अंत में स्वधान लेजाते हैं ।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"एकादशी की सत्संग सभा के अवसर पर"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

नियम एसे ही लेना जिन्हे आप पूर्ण कर सके । देखा-देखी में नियम नही लेना । अपनी स्थिति व परिस्थिति पर नियम लेना । शरीर को उनता ही कष्ट देना जितना वह बर्दास्त कर सके । शरीर को नुक्सान न करे एसा नियम लेना । शरीर निरोगी रहे उस प्रकार नियम लेना । कुछ नियम लेते है कि एक दिवस भोजन एक दिवस उपवास । इससे वे खुद भी परेशान होते है और परिवार को भी करते है । ऐसा नियम नही लेना जिससे भजन-भक्ति बन्द हो जाये । भजन-भक्ति उपवास में सहायता करे ऐसा नियम लेना । थोडा इन्द्रियों का दमन करना । भगवानने दया करके यह शरीर दिया है । इस शरीर के माध्यम से ही संसार रुपी सागर को पार कर सकते है । देवताओ को भी यह शरीर दुर्लभ है क्योकि मनुष्य के अलावा किसी और योनि में मोक्ष है ही नही । एक नियम सदैव रखना कि "मुझसे कोई दुःखी न हो" । समस्त शास्त्र के रचयिता भगवान वेद-व्यास ने परमात्मा से पूछा समग्र शास्त्र का सार क्या है ? तब परमात्मा बोले जो सभी शास्त्रो का सार है वह मैं आपको बताता हूँ । परोपकार में पुण्य है और जो दूसरे जीवो को कष्ट दे वह "पाप" है । इसलिये पाप और पुण्य की सरल व्याखा यह है कि दूसरो को सुख देना पुण्य है और दुःख देना पाप है । हम किसी को सुख न दे पाये तो कोई बात नहीं किंतु दुःख भी नही देना चाहिए । क्योंकि दुःख देने से बड़ा कोई पाप है ही नहीं । ये पाप किसी भी प्रकार खत्म नही होता । हमे तो अजात शत्रु बनना है । अजात शत्रु अर्थात् जो शत्रु को भी माफ कर दे वह । यदि किसी ने हमारा गलत किया हो तो हमे सहनशीलता विनम्रता दिखा कर माफ कर देना चाहिये और अपेक्षा ही सब दुःखो की जननी है तो किसी भी प्रकार की अपेक्षा न रखें । जो सत्संग हम करते है उसी का हमें पालन करना है । उसका मनन और चिंतन करना और उसके मुताबिक वर्तन करना है । समुद्र के भीतर सुतही (सीपी) होती है, वह क्या करती है । उसी के भीतर मोती बनती है, वह कैसे ? स्वाती नक्षत्र में जब पानी वरसता है वह बूंद उसमें पड़े तो ही मोती बनती है । सीपी को यह खबर होती है कि स्वाती नक्षत्र की बूंद कब पडने वाली है । ऐसा जब समय आता है तब वह किनारे आजाती है और स्वाती नक्षत्र की बूंद लेकर समुद्र में चली जाती है । वही बूंद मोती के रुप में परिवर्तित हो जाती है । जिस तरह सीपी सतर्क रहती है उसी तरह हमें भी सतर्क रहकर सच्चा सत्संग करना है । तभी हमारा कल्याण होगा । इसका ध्यान रखना चाहिये । नरनारायणदेव की शरण में की गयी भक्ति तथा सत्संग मनुष्य को निर्मल बनाता है । सत्संग के लिये सदा तत्पर रहना चाहिये । सीप की तरह ग्रहण करने की भावना भी होनी चाहिये । ज्ञान ग्रहण करके समुद्ररुप आत्मा में आनंद लेना चाहिये । इससे अपने में भी चमक आजायेगी । सभी सीप में यह भाव आसकता है कि हमारे भीतर भी मोती बने । परंतु वरसात की सभी बूंदो से मोती नही बनती । जब उस सीप को खोलें तब ख्याल आयेगा कि सीप में मोती है या खाली है । ठीक इसी तरह से हम सभी का जीवन है समय चूकने पर कुच हाथ नही लगेगा, समय से सावधान रहने पर मोक्ष लक्ष्य है, अन्यथा व्यर्थ का प्रयास करना है । ब्रह्मरुप का मतलब अपनी शरीर को शरीर नहीं मानना, अपना स्वरुप तो आत्मा है । हमें जब किसी से दुःख होता है तब हम कहते है कि हमे बहुत दुःख हुआ, ऐसा नही कहते कि हमारी आत्मा को दु-ख हुआ । दुःख किस को होता है । दुःख सदा अहंकार को होता है । आत्मा को नही होता । जब कहीं चोट लगती है तो हम कहते हैं कि हमारे हाथ में चोट लगी है ।

इसमे जो मैं और मेरा शब्द है - उसमें मैं यह अहंकार है - मेरा यह शरीर है । मानव का शुद्ध स्वरुप आत्मा है । मानव आत्म स्वरुप है । यही आत्म स्वरुप में परमात्मा की उपासना की जाय तो परब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है, इसी को मोक्ष कहते हैं । परब्रह्म भगवान स्वामिनारायण है । जिस तरह समुद्र की एक बूदं - वह बूंद है लेकिन वह

समुद्र नहीं है। समुद्र जितना महान है उतनी महानता बूंद में नहीं है। इसी तरह हमें सदा ध्यान रखना चाहिये कि चाहे कितनी बड़ी सत्ता-पद स्थान को मनुष्य प्राप्त करले वह ब्रह्म का अंश मात्र ही रहेगा, वह परब्रह्म नही हो सकता। इस लिये सदा अहंकार के विना भक्ति करनी चाहिये। आप सभी के नियम परमात्मा पूर्ण करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

●

स्वरुप निष्ठा

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

भगवान श्री स्वामिनारायण गढडा मध्य के १६ वें वचनामृत में कहे हैं कि स्वरुप निष्ठा रखने से धर्मनिष्ठा उसमें आजाती है। स्वरुप निष्ठा अर्थात् भगवान के स्वरुप का निश्चय। सच्चे सन्त द्वारा भगवान की पहचान हो जाने के बाद संशय नही रहना चाहिए। हम सभी धर्म का पालन करते हैं, नियम का पालन करते हैं। लेकिन इसके साथ भगवान में निश्चय होना आवश्यक है। उन्हीं में विश्वास रखने पर ही यह निश्चय होगा कि ये ही हमारा कल्याण करने वाले हैं। वचनामृत में लिखा गया है कि यदि नियम पालन करने में भूल हो जाय तो उसे भगवान माफ कर देते हैं, लेकिन स्वरुप निष्ठा में थोड़ा भी कमी रहेगी तो मोक्षमार्ग से गिरने से कोई नहीं रोक सकता। अपना कल्याण स्वरुप निष्ठा से संभव है। जैसे कोई नीम के वृक्ष को बरगद कहे और बरगद के वृक्ष को नीम का वृक्ष कहे - लेकिन हमें निश्चय होना चाहिये कि यह नीम का ही वृक्ष है। यह तभी संभव है जब निश्चय में कोई कमी न रहे तो। इसी तरह अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण में पक्का निश्चय होने पर ही प्रभु कल्याण दाता बनेंगे - अन्यथा नहीं।

अर्जुन को भगवान का निश्चय था। भीष्म पितामह ने प्रतिज्ञा की कि कल के युद्ध में मैं भगवान कृष्ण को चक्रधारण कराऊँगा। अर्जुन के बधकी प्रतिज्ञा कर लेते हैं। भगवान को यह पता चलता है वे अर्जुन को कहने जाते हैं तूं यहाँ सोता है और उधर भीष्म पितामह तुम्हे मारने की प्रतिज्ञा किये हैं। यह सुनकर अर्जुनने कहा कि प्रभु हमें किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है इसलिये कि आप जब जग रहे है तो हम सोयंगे ही न। हमें क्या चिन्ता ? इसे कहते हैं दृढ निश्चय। अर्जुन को भगवान का निश्चय था। हमें इस तरह का निश्चय नहीं है, कही न कहीं संशय हो ही जाता है। कभी यात्रा में गये हों, उत्सव में गये हों, तो ऐसा विचार आता है कि वहाँ जाने पर निवास की व्यवस्था मिलेगी या नहीं। पानी-मिलेगा की नहीं - भोजन सोने की व्यवस्था, ओढने और बिछाने की व्यवस्था मिलेगी या नही। प्रातः जल्दी उठना पड़ेगा। इस तरह नाना प्रकार की चिंता होने लगती है। इसी तरह भगवान में भी स्वरुप निष्ठा नहीं हो पाती, इसलिये निश्चिय रहना चाहिए।

गढडा मध्य के १४ वें वचनामृत में कहा गया है कि ''भगवानना स्वरुपनां निश्चय करीने ज निर्गुणं थवाय छे। भगवान के स्वरुप का निश्चय जिसे हुआ है उसे असामान्य समझना चाहिए।

वालांक देश में हामा पर गाँव में भक्तराज करशनभाई रहते थे। वे भगवान के अनन्य भक्त थे। वे खेत में बाजरी लगाये थे। उनकी बाजरी घड़रोज आकर खा जाते थे, इसलिये वे रात भर खेत की रखवाली में जगते रहते थे. एक बार भगवान स्वामिनारायण उनके यहाँ गये - उन्हें देखे तो उनकी आंखे जगने से परेशान लग रही थी। जब वे भगवान को पहचाने तो आनंद की सीमा न रही। भगवान ने परेशानी का कारण जानकर कहा कि आप इस समय घर जाकर मेरा चिन्तन करते हुए सो जाईये, मैं खेत की रखवाली करुंगा। वे घर जाकर शांति से सो गये।

दूसरे दिन प्रातः आकर देखे तो खेत के चारो तरफ माणकी घोड़ी के पैर दिखाई दिये। उन्हे निश्चय हो गया कि निश्चित ही मेरे प्रभु माणकी पर सवार होकर मेरे खेत की रखवाली किये हैं। यह वात रोज की हो गयी। भक्त भगवान की भजन में लीन होते गये। उधर बाजरा १-१ हाथ जितना लंबा तथा दानेदार तैयार हो गया।

एकबार रात्रि में टींबा गाँव का मेपा कचरा करशनभाई का बज़डा देखा, उसके मन में चोरी करने की इच्छा हो गयी। वह अपने साथ दो साथियों को लेकर खेत में गया वहाँ उसे पांच घुड़सवार पकड़ लिये और मार पीट कर भगा दिये। वे सभी अपने काटने के साधन भी छोड़कर भाग निकले। उन घुड़सवारों के रुप में स्वयं भगवान स्वामिनारायण थे। बाद में भगवान स्वामिनारायण करसनभाई को जगाकर कहे कि अब बजडा पक गया है, उसे काट लीजिये, कब तक खेत की रखवाली करायेंगे। आज खेत में चोर आये थे। उन्हें हम मार भगाये। बाद में भगवान अदृश्य हो गये। इस तरह भगवान भक्त की रक्षा

करके चिन्ता मुक्त करते है। भगवान के ज्ञानी भक्त के साथ सत्संग करके ज्ञान को दृढ बनाना चाहिये । जब तक भगवान के स्वरुप में दृढता नहीं आयेगी तब तक संसार में गमनागमन करना पड़ेगा । लेकिन मोक्ष की प्राप्ति सम्भव नहीं हो सकेगी । इसलिये स्वरुप निष्ठा आवश्यक है।

●

जिसे विषय का चिन्तन नहीं होगा वह बड़ा है
- बिजल चौधरी (इन्द्रपुरा)

जिस तरह विषयों का चिंतन करते रहने से जीव को विषया शक्ति बढती जाती है । इसी तरह जिसे भगवान में अखंड चिन्तन हो गया है उसके मन में विषय का विकार उत्पन्न नहीं होता । जो भगवान के सिवाय अन्य विषयों का चिंतन करते हैं वे अज्ञानी महामूर्ख हैं।

वह यह इसलिये कि स्त्री, पुत्र, धन इत्यादि पदार्थ जो जिस योनि में जाता है वह प्राप्त करता रहता है। लेकिन यह मनुष्य जन्म अत्यंत दुर्लभ है। इसी शरीर से मोक्ष की प्राप्ति संभव है। इसलिये पंच विषय के भोग के सुख का त्याग कर एक मात्र भगवान के शास्वत सुख की तरफ गति करनी चाहिये । जैसा करेंगे वैसा भरेंगे । अब दृढ भाव से निर्वासनिक होकर ईश्वर भक्ति में मन लगाना चाहिये । छोटे-बड़े सभी को भगवान के धाम में जाना है। इसलिये भगवान की जिस में प्रसन्नता हो वह काम करना चाहिए । आयु कम है समय बहुत बलवान है - कलियुग का पूर्ण प्रभाव है, फिर भी हम सवाधान होकर दृढ भक्ति के साथ प्रभु पारायण रहेगे तो निश्चित ही भगवान मदद करेंगे । भगवान कर्म फल प्रदाता हैं। अवश्य उत्तम कर्म के उत्तम देंगे। वे बड़े दयालु हैं। ऋषभदेव चक्रवर्ती राजा थे फिर भी राज्य का त्याग करके वन में चले गये। फिर भी वहाँ मृग शावक में लिप्सा होने से मृगयोनी में जाना पड़ा। इसलिये सदा सत्यासत्य का निरिक्षण करके सत्य का आश्रय लेना चाहिए। इससे अपने भगवान नरनारायणदेव प्रसन्न होंगे।

●

जीवन धन्य बनाओ भक्ति भाव से
- पटेल भानुबहन मनुभाई (कुंडाल-कडी)

खाली आव्या, खाली जाशो,
साथे शुं लाव्या लई जा शो ।
जीवन धन्य रे बनाओ भक्ति भावथी,
हुं तो माला रे जपी ले घनश्यामनी ॥

मनुष्य जब जन्म लेता है और जब मरता है तब दोनो स्त्रियों में खाली हाथ ही रहता है। बीच में जो कुछ दिखाई देता है। वह उसने पैदा किया है - उस की खुद की करनी है - जिसके परिणाम स्वरुप सुख-दुःख भोगता है। जीव का यह भी एक स्वभाव है - जिससे वह बधता जाता है। इसीलिये गुणातीतानंद स्वामी कहते हैं कि ''मन ने तो समग्र ब्रह्मांड चाहिए, फिर भी उसे संतोष नहीं होता।''

एक राजा अपनी जीवन शैली से अपार सम्पत्ति एकत्रित किया। अंतिम श्वासतक धनकी लिप्सा बनी रही। परिणाम यह हुआ कि एक दिन ऐसा आया क्षण भर में सारी लीला पूरी हो गयी।

कीर्तन के माध्यम से आश्वासन मिलता है -

मारु मारु करीने धन मे लव्युं रे,
तेमां तारु नथी तलभार,
अंतकाले सगुं नही कोईने रे,

श्रीजी महाराज संत समागमकी महिमा स्वमुखे वर्णन किये है। संत समागम को कल्प वृक्ष कहे है। गृहस्थाश्रम सबसे उत्तम बताया गया है। जीवन को धन्य बनाने वाले श्रीहरि की भजन करना चाहिए। वचनामृत में वडताल के १६ वें कहे हैं कि ''ए भगवान ना भजन जेवुं राज्य ने विषे सुख होय तो स्वयंभूव मनु आदिक जे मोटा मोटा राजा ते सर्वे राज्य मूकीने वनमां तप करवा शा सारुं जाय ? अने भगवानना भजन जेवुं स्त्री विषे सुख होय तो चित्र केतु राजा करोड स्त्रियोने शा सारु मूके ? अने भगवानना भजनना सुक आगड़ चौद लोकनुं जे सुख ते नरक जेवुं कह्युं छे। ए अमारा अंतरनो रहस्य अभिप्राय हतो ते अमे तमारी आगळ कह्यो। निष्कुळानंद स्वामीने लिखा है कि -

अमे एक प्रभु ने पर हरी, जन जे जे करे छे उपाय,
तेमां सर्वे रीते संकट छे, मानी लेजो मन मांय,

इसका सार यह है कि मनुष्य का जन्म विषय भोग से मुक्त होने की वात की है। संत समागम करना चाहिये । अन्तर्भाव से भगवान का सदा चिन्तन करना चाहिए। इससे प्रभु अनहद कृपा की वरसात करेंगे। जिस क्रिया के करने से भगवान की प्रसन्नता मिले वही निरन्तर चिन्त करते हुए करना चाहिए । इससे अन्तर सुख मिलेगा । इहलौकिक तथा पारलौकिक सुक मिलेगा।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में परंपरागत रुप से जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी की शोभायात्रा का आयोजन

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवानने जीवों के आत्यंतिक कल्याण हेतु अलौकिक उत्सवों का आयोजन किया था । उसकी परंपरा आज भी विद्यमान हैं । भादो शुक्लपक्ष-११ जलझीलणी एकादशी को श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर से दोहपर १-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा ब्रह्मनिष्ठा संतो, हरिभक्तो तथा श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल की सहायता से विघ्नहर्ता देव श्री गणपतजी महाराजकी सुंदर शोभायात्रा अलौकिक सुवर्ग जडित पालकी में धूमधामपूर्वक निकाली गयी । प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर में आरती उतारकर शोभायात्रा को प्रस्थान करवाया । परंपरागत रुप से उत्सव मंडल ने उत्सव किया । असह्य गरमी में भी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी को प्रसन्नता पूर्वक दर्शन दे रहे थे। शोभायात्रा नारणघाट मंदिर पहुंची तब प.पू. लालजी महारजश्रीने पवित्र साबरमती नदी में नौका विहार करवाकर आरती उतारकर वहाँ सुंदर उत्सव किया गया । साम को ६-३० बजे मंदिर के बहार के चोक में उत्सव के साथ अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव की संध्या आरती, में पहुंचे । आरती प.पू. लालजी महारजश्रीने उतारी इस शुभ दिन पर स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगतने सुंदर आयोजन किया। (शा. नारायणमुनिदासजी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में आयोजित भिन्न कार्यक्रम श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति अहमदाबाद में आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट) की प्रेरणा से तथा बापुनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने ता. १५-९-१३ रविवार को श्री कर्मशक्ति पार्क मंदिर में विशाल सत्संग सभा का आयोजन किया था । जिस में धुन, कीर्तन तथा जनमंगल नामावलि का समूह पाठ किया गया । सभा में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने (कोटेश्वर गुरुकुल), गोपाल स्वामी तथा ऋषि स्वामीने उद्‌बोधन किया। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विराटनगर में ४१ घंटे की महामंत्र धून की गयी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा- आशीर्वाद से तथा सां. रंजनबाई की प्रेरणा से महिला मंडल द्वारा ता. ६-८-१३ से ता. २५-९-१३ तक रोज ४ से ६ श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन कि गयी ।

(नानी बहन)

वजापुर गाँव में सत्संग सभा का आयोजन

श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में वजापुर गाँव में सुंदर सभा की गयी । इस सभा में वजापुर तथा कांठा विस्तार के हरिभक्तो द्वारा सुंदर आयोजन किया गया । सभा में गुरु स्वामी तथा नीलकंठ स्वामीने (कालुपुर) सर्वोपरी भगवान तथा धर्मकुल की महिमा को बताया । (समस्त सत्संग समाज, श्री न.ना.देव युक मंडल, वजापुर)

समा गाँव में सत्संग सभा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में समा के श्री नरनारायणदेव युक मंडल तथा समस्त हरिभक्तो द्वारा भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया । सभा में स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री), शा. राम स्वामी तथा चैतन्य स्वामीने कथा-वार्ता का लाभ दिया। (श्री न.ना.देव युवक मंडल, समौ)

बदपुरा गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में बदपुरा गाँव में भव्य सत्संग सभा की गयी । जिस में नारणघाट से महंत शा.पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी आदि संतोने कथावार्ता का लाभ दिया गया। (सत्संग बदपुरा)

ईश्वरपुरा गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में ईश्वरपुरा गाँव के

हरिभक्तों द्वारा सत्संग सभा का आयोजन किया गाय । सभा में नारायणघाट मंदिर से महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, महंत शा.पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी, शा. माधव स्वामी, शा. दिव्यप्रकाश स्वामी तथा ऋषि स्वामीने हरिभक्तों को श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के प्रति निष्ठा रखने को कहा ।(श्री न.ना.देव युक मंडल तथा सत्संग समाज ईश्वरपुरा)

प.पू.ध.धु. महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सभ्य बनने का कार्यक्रम अविरत कार्यरत है

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बापुनगर द्वारा की सभ्यों ने भाग लिया है । श्री नरनारायणधेव युवक मंडल नारणघाट, वाडज, राणीप, न्यु राणीप, साबरमती से कई सभ्य जुड़े । आकरुंद, बायड तथा डांगरवा में भी वह कार्यक्रम चालु है।

प.पू. लालजी महारजश्रीने तमाम श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्यों को इस सुंदर प्रवृत्ति हेतु आशीर्वाद दिये।

गाँवो में सत्संग सभा आ आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में निम्न गाँव मों सभा की गयी । जिस में मोडासा, परढोल, वर्धाना मुवाडा, खेरोल आदि गाँवो में नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमदासजी, शा. दिव्यप्रकाशदासजी, शा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच) आदि संतो ने कथा श्रवण कीर्तन-धुन की । लवारपुर, नांदोल तथा महुन्द्रा गाँव में १४१ मिनिट की महामंत्र धून की गयी ।

(श्री नरनारायणधेव युवक मंडल, नरोडा)

न्यु राणीप में ब्लड डोनेशन केम्प

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में न्यु राणीप में सामाजिक प्रवृत्ति के अंतर्गत ब्लड केम्प तथा आंखो के निदान केम्प का आयोजन किया गया जिस में ४१ बोटल ब्लड, डोनेट किया गया । नारायणघाट के संत शा. दिव्यप्रकाशदासजी तथा व्रजभूषण स्वामीने ब्लड डोनेट किया । हरिभक्तों ने भी ब्लड डोनेट किया ।

न्यु राणीप में समूह महापूजा का आयौजन हुआ । नारणघाट मंदिर के संत मंडलने तमाम व्यवस्था की थी ।

(श्री न.ना.देव युवकमंडल, न्यु राणीप)

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल, कांकरिया

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में श्री नरनारायणदेव महिला मंडल ने ४१ सभा का आयोजन किया । जिस में ४१ घंटे की महामंत्र धून, ४१ वचनामृत पारायण, ४४१ जनमंगल नामावलीपाठ आदि श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में बहनोने आयोजित किया ।

(स्नेहलबहन, काकंरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर (बहनो के मंदिर में) ४१ घंटे की अखंड महामंत्र धून का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर में सांख्ययोगी नर्मदाबा, बचीबा आदि बहनोने तथा कर्मप्रेमी बहनोने मिलकर ४१ घंटे की अखंड धून की । गाँव की बहनोने भी इस में भाग लिया । स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा महंत के.पी. स्वामीने सुंदर आयोजन किया था। (शा.स्वा. भक्ति स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में जन्माष्टमी का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से नारायणघाट मंदिर में सावन कृष्ण पक्ष-८ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी की रात में ९-०० से १२-०० भव्य सत्संग सभा तथा संतो द्वारा कथा का आयोजन किया गया । रात्रि में १२-०० बजे जन्मोत्सव की आरती की गयी। (शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदास)

माणसा गाँव में प.पू. बड़े महाराजश्री के आश्रय में सत्संग सभा का आयोजन

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपतपि प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४१ वाँ प्राकट्योत्सव आगामी ता. १३-१०-१३ को गुजरात के पाटनगर गांधीनगर में धूमधाम से मनाया जायेगा । इस प्रागट्योत्सव के उपलक्ष में भिन्न-भिन्न धार्मिक एवम् समाजपोयगी कार्यक्रमो का आयोजन

किया गया । जिसके अंतर्गत माणसा गाँव में प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में ४१ अपंगो को ट्राईसिकील वितरण, गाँव के ४१०० बच्चों को शैक्षणिक साधनों का वितरण, ब्लड डोनेशन केम्प, फ्री मेडिकल निदान केम्प का आयोजन किया गया । अहमदाबाद कालुपुर के स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, स.गुत महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नाराटयणघाट), सगु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी, शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी आदि संतो की उपस्थिति में श्रेष्ठी श्री हरिभाई चौधरी, श्री डाह्याभाई पटेल, श्री गोविंदभाई पटेल आदि हरिभक्तगण उपस्थित थे । संतो ने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रर्वतित सेवा धर्म की परंपरा की बात की । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने अति प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया । ५००० से भी अधिक हरिभक्तोने प्रवृत्ति में भाग लिया। (शा.चैतन्य स्वामी)

हिंमतनगर गाँव में त्रिदिनात्मक शिबिर का आयोजन

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा भक्ति महिला मंडल की प्रेरणा से हिंमतनगर गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४१ वें प्राकट्योत्सव उपलक्ष में ता. ३०-८-१३ से ता. १-९-१३ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर के विशाल खंड में त्रिदिनात्मक शिबिर का आयोजन किया गया । जिस में सां. कमलाबा (सुरेन्द्रनगर) के प्रवचन द्वारा प्रारंभ किया गया । कथा की वक्ता सां. कोकिलाबाई थी । इस प्रसंग पर समूह महापूजा, युवती मंडल तथा बालिका मंडल द्वारा सांस्कृतिक प्रोग्राम, प्रश्नोतरी आदि कार्यक्रम किये गये । सभा संचालन शा. दामभाईने किया । आभार विधिनीलाबहन पटेलने की । इन कार्यो की प्रेरणा नीलाबहन, डाहीबहन, शातंबहन, मंजुला बहन तथा यतिनाबहन है ।

(नीलाबहन पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में नूतन (निर्माणाधिन) शिखरबध्धश्री स्वामिनारायण मंदरि कलोल पंचवटी में महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (वी.पी. स्वामी) की प्रेरणा से ता. १८-२-१३ को हरिभक्तों द्वारा महापूजा विधिश्री उमंगभाई के हाथों से हुई । (पटेल प्रविणभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण का आयोजन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पपू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा वयोवृद्ध संत स्वामी हरिप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु.शा.स्वा. माधव स्वामी के मार्गदर्शन से महंत स्वामी शा. हरिॐ स्वामी तथा शा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर) के वक्तापद पर पवित्र सावन महीने में श्रीमद् सत्संगिजीवन ज्ञानसत्र धूमधाम से सम्पन्न हुआ ।

इस पारायण का आयोजन प.भ. ईन्द्रवदनभाई रावजीभाई पटेल (हिरापुरवाले) तथा उनके माता-पिता अ.नि. रावजीभाई पूनमभाई पटेल तथा अ.नि. माणेकबहन रावजीभाई पटेल के स्मणार्थ हेतु किया गाय । ता. २४-८-१३ की साम ५-०० बजे उनके निवास स्थान से धूमधाम से पोथीयात्रा मंदिर तक पहुंची ।

इस प्रसंग पर सभा में स्वा. कृष्णजीवनदासजी (माडंवी कच्छ) तथा शा.माधव स्वामीने सेवा महिमा का गान किया ।

प्रसंग में कई संतगण वधारे थे । जिस में पू. शा.स्वा. आत्मप्रकासदासजी (जेतलपुर) ने नारणपुरा के सत्संग की प्रशंसा की । कालुपुर, नारणघाट, जेतलपुर तथा गढडा में संतगण पधारे थे ।

कथा में श्री घनश्याम जन्मोत्सव, अन्नकूटोत्सव, गादी अभिषेक, जन्माष्टमी, रासोत्सव मनाया गया ।

अन्नकूट उत्सव में नारणपुरा के प्रत्येक हरिभक्तों ने अपने घर से प्रसाद बनाकर अन्नकूट में भोग लगाया । जन्माष्टमी धूमधाम से मनायी गयी ।

पारायण के उपलक्ष में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालश्री पधारी थी ।

पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग में प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । यजमान परिवार तथा हरिभक्तो को प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये । इस प्रसंग पर वयोवृद्ध स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी (मूलीवाले) ने भी धर्मकुल की महिमा कहा । ता. १-९-१३ रविवार को पवित्रा एकादशी को प्रात: ४-०० बजे महंत स्वामी की आगेवानी में श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने श्री नरनारायणदेव के

दर्शन की पदयात्रा करके मंगला आरती के दर्शन करवाये। साम को अखंड महामंत्र की धून की गयी। पारायण का समग्र सचालन स.गु. प्रेमस्व स्वामी तथा शा. भक्तिनंदन स्वामीने किया था। (पटेल घनश्यामभाई उवारसदवाले)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया (रामबाग)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वदा से तथा महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा आनदं स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मदंरिक कांकरिया में सावन महीने में ठाकुरजी समक्ष भव्य झुलोत्सव का आयोजन किया गया । तथा समग्र सावन महिने में स.गु.शा.स्वा. निर्लेवस्वरुपदासजीने हरिभक्तों को कथा श्रवण करवाया।

सावन कृष्णपक्ष-८ के श्रीकृष्ण जन्मोत्सव को मदंर के चोक में युवक मंडल तता महिला मंडल द्वारा भव्य रास-कीर्तन भक्ति का आयोजन किया गया।

१२-०० रात्रि में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। मंदिर में बिराजमान सिध्धेश्वर महादेव के वार्षिक दर्शन करवाये गये।

ता. १-९-२०१३ एकादशी को मंदिर में महारुद्र याग का आयोजन किया गया। इस प्रसंग में पपू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। उन्होंने श्रीफल का होम करके यज्ञ की पूर्णाहुति की । सभा में भक्तो को प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये।

अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री सिध्धेश्वर महादेव का महाभिषेक आरती की । जलजीलणी एकादशी को ठाकुरजी का तथा श्री गणपतिजी का विसर्जन शोभायात्रा कांकरिया मंदिर से मणिनगर में धुमकर वापस कांकरिया तालाब में पुर्णाहुति हुई। उत्सव मंडलने सुंदर उत्सव किया। हजारो भक्तोंने शोभायात्रा में भाग लिया। (शा. यज्ञप्रकाशदासजी तथा श्री न.ना.देव युवकमंडल, कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से मंदिर के महंत शा. धर्मवल्लभदासजी, स्वा. हरिवल्लभदासजी तथा हरिनंदन स्वामी की प्रेरणा से मंदिर में महिला मंडल द्वारा श्रीमद् भागवत त्रिदिनात्मक पारायण ता. २५-७-१३ से ता. २७-७-१३ तक सत्संगी बहनश्री वर्षाबहन के वक्तापद पर पूर्ण हुई । जिसके यजमान लाभुबहन अमृतभाई पटेल थे।

प्रति वर्ष की भांति सावन महिने में ६ठ्ठा ज्ञानसत्र ता. ७-८-१३ से ११-८-१३ तक रात्रि में ८-३० से १-३० तक भिन्न भिन्न विषयो में जिसके वचनामृत (२७३) तथा उसके संकलन कर्ता पांच नंद संतो की समक्ष भाव से दी गयी। दूसरे दिन रासलीला, तीसरे दिन श्रीहरि स्थापति स्वरुपों को सभा मंडप में स्थापित किया गया। चौथे दिन ''मा-बाप ने भूलशो नहि'' तथा अंत में रविवार को श्रीहरि द्वारा स्थापित संप्रदाय की दो गादीओं की स्थापना तथा आचार्यो की परंपरा की रसप्रद कथा की गयी। पांच दिवस की कथा में वक्ता शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी थे।

पूर्णाहुति प्रसंग पर कालुपुर मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी (हरिद्वार) आदि संतोने बोपल के श्री नरनारायणदेव के शुद्ध सत्संग की प्रशंसा की। मंदिर में ठाकुरजी समक्ष भिन्न भिन्न झुलोत्सव के दर्शन का आयोजन किया गाय था ता. १५-८-१३ को हरिभक्तों को गढपुर आदि तीर्थ के द्रशन करवाये गये।

(प्रविणभाई उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में श्री गणपति जी का नवी पगडी का दर्शन

संप्रदाय का सर्वप्रथम मंदिर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से भाद्रपद कृष्णपक्ष की ४ चौथ से श्री गणपतिजी को सुंदर सजाकर तथा पगड़ी पहनाकर दर्शन करवाया गया था। यह सुंदर पगडी अ.नि. पार्षद महोबतसिंहजी की दिव्य प्रेरणा से उन्हीं के आत्मीयजनों ने बनवायी थी। जिस में पार्षद श्री वनराज भगत प्रेरक थे। (पार्षद महादेव भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो के) प्रांतिज

श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह ज्ञानयज्ञ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाजी के आशीर्वाद से तथा सां. बचीबा, सां. नर्मदाबा (जेतलपुर) की प्रेरणा से यहाँ के बहनो के मंदिर में श्रीमद् सत्संगिजीवन का सप्ताह पारायण पू. सां.यो. नर्मदाबा के वक्ता पद पर हुआ था। इस शुभ प्रसंग पर ता. ११-९-१३ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। सभी बहनों को तथा यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। रहने की व्यवस्था करने वाले

यजमान के घर पदार्पण की थी । कथा में आने वाले सभी प्रसंग धूमधाम से मनाये गये थे । ता. १५-९-१३ को पूर्णाहुति के प्रसंग पर महाआरती का लाभ सभी बहनों ने लिया था । सां.यो. रंजनबा तथा सविता बा की सेवा सराहनीय थी। (प्रवीणाबहन मोदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युदिल्ली पाटोत्सव संपन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी तथा स्वयंप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में विराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का २० वाँ पाटोत्सव सत्संग मंडल के सहयोग से ता. १५-८-१३ को विधिपूर्वक मनाया गया था । संतो द्वारा षोडशोपचार महाभिषेक-महापूजा-अन्नकूट आरती तथा कीर्तन-धुन इत्यादि के बाद संतो की प्रेरक वाणी के बाद सभी महाप्रसाद लिये थे। (जनकभाई दिल्ली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लिम्बोद्रा (गांधीनगर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से यहाँ के युवक मंडल द्वारा उत्तम प्रवृत्ति चलती है । जिस में इस वर्ष की जन्माष्टमी के पूर्व सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये थे । जिस में व्यसनमुक्ति नाटक, नृत्य, सर्टिफिकेट वितरण, वृद्धों का सन्मान, सत्संग, मटकी फोड़कर जन्मोत्सव इत्यादि सम्पन्न हुए थे । दूसरे दिन प्रातः ८-०० बजे श्री स्वामिनारायण मंदिर से शोभायात्रा निकाली गयी थी । जिस के प्रारंभ की आरती रामजी मंदिर के पुजारी बलरामदाजीने की थी । सभी विस्तारों में यह शोभायात्रा निकाली गयी थी । सभी लोक जाति-पांति के भेद भाव को भूलकर इस शोभायात्रा में समामिल हुये थे । जिस में गाँव के अंबिका मंडल, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा ग्रामजनो के सहयोग से कार्य सम्पन्न हुआ था ।

(वाधेला सुमनसिंह - लिम्बोद्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से बालवा मंदिर में श्रावण मास में शा.स्वा. भक्तिप्रकाशदासजी तता स्वामी मुक्तजीवनदासजीने श्रीमद् सत्संगिभूषण ज्ञानयज्ञ का लाभ दिया था । श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । संतो द्वारा गाँवो गाँवो में सत्संग की सुंदर प्रवृत्ति चलती है । इसके साथ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें जन्मोत्सव प्रसंग के उपलक्ष्य में १४१ मिनिट की धुन रखी गयी थी । जिस में गाँव के सभी भक्त भाग लिये थे। (को. रमणकाका - बालवा)

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल न्यु राणीप

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव महिला मंडल राणीप तथा न्यु राणीप द्वारा धार्मिक प्रवृति चल रही है । श्री के. एस. ढेढिया मूक बधिर विद्या मंदिर सोला में अभ्यास करने वाले मूक बधिरों ने सुदंर पौष्टिक भोजन बनाकर सभी को खिलाया था ।

(महिला मंडल - राणीप)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में चातुर्मास कथा

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रतिवर्ष की तरह प्रसादी की दिव्य सभा मंडप में श्रीमद् सत्संगीजीवन कथा स्वा. धर्मप्रवर्तकदासजीके वक्ता पद पर सम्पन्न हुई थी । संत हरिभक्तों ने सुंदर लाभ लिया था ।

(को. नारायणुनिदासजी)

विजापुर गाँव में महिला सत्संग सभा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के सानिध्य में यहाँ के वीजापुर गाँव में बहनो द्वारा सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में धर्मज्ञान- वैराग्य, भक्ति का भावी पीठी में सत्संग का सिंचन हो उसके लिये सतत प्रयत्नशील रहने के लिये प.पू. गादीवालाजीने सभी को आशीर्वाद दिया था । (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - जनतानगर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में आषाढ कृष्ण-२ से श्रावण कृष्ण-२ तक प्रतिदिन ठाकुरजी के समक्ष झूले को सजाकर झुलाया जाता था । अन्तिम पाचं दिन तक सभा मंडप में एक साथ १२ झूलों को अलग-अलग ढंग से सजाकर प्रदर्शन में लिया गया था । बड़ी संख्या में हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे । मीडिया तथा दैनिक समाचार पत्र वाले सुंदर कवरेज किये थे । शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी तथा पंकजभाई पारेख के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने आयोजन किया था । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगध्रा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से हरिकृष्णधाम (मूली राधाकृष्णदेव देश का) तथा भुज (कच्छ का दर्शन) के लिये ७०० जितने श्री नरनारायणदेव के हरिभक्तों ने तथा

संतोने भाग लिया था । ता. ८-९-१३ को रजणीतगण गाँव के मंदिर में सभा हुई थी । जिस में देव-आचार्य की महिमा का गान मूली के धर्म जीवन स्वामीने किया था । मनोजभाई की सेवा सराहनीय थी ।

मेथाण गाँव में जलझीलणी एकादशी के दिन प्रसादी के तालाब में जहाँ पर श्रीहरि १८ बार पधारे थे, ऐसे प्रसादी के तालाब के किनारे संत-हरिभक्तों ने कथा का लाभ लिया था । (अनिलभाई दुधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा यहाँ के वयोवृद्ध संत स्वामी नरनारायणदासजी के आशीर्वाद से श्रावण मास में भव्य झूले पर प्रभु का दर्शन तथा सत्संगिजीवन की कथा स्वा. गोपालजीवनदासजी के वक्तापद पर हुई थी । श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया । के.पी. स्वामी, कालू भगत श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा बहनो के मंडलने खूब सेवा की थी ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - रतनपर)

विदेश सत्संग समाचार

अमेरिका की राजधानी वोशिंग्टन डी.सी. में (आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

पत्ते पत्ते पर श्री स्वामिनारायण नाम देखा जायेगा आज वह चरितार्थ हो रहा है । सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से वोशिंग्टन डी.सी. में (आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २६-८-१३ से ता. १-९-१३ तक धूमधाम मनाया गया था । २२ वर्ष पूर्व इस मंदिर का शुभ संकल्प प.पू. महाराजश्रीने किया था । उस समय से आज तक एकादशी, पूनम, रविवार इत्यादि का कार्यक्रम एक होल में चलता था । भजन-भक्ति का कार्यक्रम बढते रहने से २०१२ अक्टूबर से १० एकड़ जमीन लेकर मंदिर का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ । जिस में ठाकुरजी की स्थापना की गयी । हरिभक्तों के सहयोग से यह कार्य बड़ी सरलता से स्वल्प समय में सम्पन्न हो गया । मंदिर के निर्माण बाद सिंहासन मूर्ति इत्यादि का भी कार्य सम्पन्न हो गया । धर्मकुल की प्रसन्नता के साथ प.पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, स्वा. देवप्रकाशदासजी, पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंत), स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) इत्यादि संतो की प्रेरणा थी । हरिभक्त तन, मन, धन के सहयोग से मंदिर का काम सरल हो गया था । महोत्सव की तैयारी होने लगी । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत सप्ताह के पारायण का आयोजन किया गया था । जिस के वक्ता पू. श्री योगेन्द्र भट्ट ता. २६-८-१३ से १-९-१३ तक थे । इस में विष्णुयाग शोभायात्रा, जन्माष्टमी के दिन सभी उत्सव बड़ी दिव्यता से मनाये गये थे । अमेरिका के सभी चेप्टरों से संत-हरिभक्त पधारे थे ।

ता. १-९-२०१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथो श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र भगवान तथा उमा शंभु, सूर्यनारायणदेव, श्री विघ्न विनायक देव, श्री कष्टभंजन देव तथा श्री नीलकंठ महादेव की प्राण प्रतिष्ठा की गयी थी।

इस उत्सव में श्री कनुभाई पटेल, श्री राजुभाई पटे, श्री महेन्द्रभाई पटेल, श्री सुरेशभाई तथा कनुभाई, महेन्द्रभाई, श्री भीखाभाई पटेल, श्री भरतभाई, दीक्षितभाई शाह, घनश्यामभाई पटेल, इत्यादि भक्तों ने रात दिन सेवा की थी । शिकागो मंदिर से पू. जे.पी. स्वामी, व्रजवल्लभ स्वामी, सिद्धेश्वर स्वामी, इत्यादि संतो ने खूब सहयोग किया था ।

मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद स्वा. अभयप्रकाशदासजी डी.सी. मंदिर के महंत के रुप में हार पहना कर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने प्रसन्नता प्राप्त किये थे । मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर सभा में संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहे कि मंदिर का अधिक उपयोग हो ऐसा सभी को करना होगा । अमेरिका की धरती पर आई.एस.एस.ओ. के १४ वें भव्य मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा अविस्मरणीय बनी रहेगी ।

(शा. अभयप्रकाशदासजी - डी.सी.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

श्री नरारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. श्री व्रजेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर ईटास्का (शिकागो) में ओगस्ट-सप्टेम्बर महिने में कई उत्सव तथा सत्संग सभा का आयोजन किया गया ।

रक्षाबंधन, मुकुटोत्सव, झूलोत्सव, शिव पुजन,

जन्माष्टमी, गणफति पूजन, श्री गणेश चतुर्दशी, वामन जयंती तथा जलझीलणी एकादशी को गणफतिजी की शोभायात्रा आदि उत्वो को संतो हरिभक्तोने धूमधाम से मनाया।

पू. स्वा. विश्वविहारीदासजी, पू. जे.पी. स्वामी, पू. शांति प्रकाश स्वामी, शा. व्रजवल्लभ स्वामीने समग्र उत्सव में ठाकुरजी के श्रृंगार, भोग आदि का कार्यक्रम देखा।

(वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया श्री गणेश महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया, सेन्ट्रल न्युजर्सी में श्री गणेश उत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी, शा.स्वा. माधवप्रियदासजी (बोस्टन), डी.के. स्वामी, ब्रह्म स्वामी आदि संतोने उत्सव की महिमा कही । श्री विनासिन जानीने यजमानश्री तथा सहयजमान द्वारा मंत्रोच्चार के साथ पूजन करवाया।

(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में जलझीलणी एकादशी मनायी गयी

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में आई.एस.एस.ओ. के पास चेप्टरो के हरिभक्तोने मिलकर महंत स्वामी की उपस्थिति में भादो शुक्ल पक्ष-११ जलझीलणी एकादशी के निमित्त फूल द्वारा जलयात्रा करके श्री गणेश उत्सव मनाया । इस प्रसंग में शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी, शा. माधव स्वामी, शा. सिध्धेश्वरदासजी, स्वा. नरनारायणदासजी, घनश्यामदासजी, ब्रह्म स्वामी तथा श्रीवल्लभ स्वामी आदि संतोने धुन-कीर्तन, भक्ति करके एकादशी के पद बोलकर श्री गणपति देव तथा श्रीहरिकृष्ण महाराज की धूमधाम से जलयात्रा की शोभायात्रा आयोजित की । यजमानश्री रसिकभाई शाह तथा बाबुभाई पटेल परिवारने अभिषेक पूजन का लाभ लिया । समग्र आयोजन संचालन शा.स्वा. माधवप्रियदासजी किये, शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजीने प्रसंग के अनुरुप कथा की।

(प्रविण शाह)

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

अमदावाद मंदिर के पार्षद कांति भगत ता. २०-९-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

माणेकपुर (चौधरी) : प.भ. दिनेशभाई हीराभाई चौधरी की माताजी जीवतबहन ता. १६-९-२०१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

अमदावाद : हंसा बहन नटवरलाल ता. २-९-१३ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षर निवासिनी हुई है।

माधवगढ : प.भ. आदरभाई तलसीभाई ता. १६-९-१३ को श्रीहरी का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है।

सोजा : प.भ. गोरधनभाई शंकरदास पटेल (स्वामिनारायण अंक के लेखक) ता. ८-९-१३ को श्रीहरी का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है।

असलाली : प.भ. अशोकभाई आशाभाई पटेल ता. ११-९-१३ को श्रीहरी का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है।

माधवगढ : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान प.भ. श्री जयेन्द्रभाई आणंदजीभाई याज्ञिक ता. २३-९-१३ को श्रीहरी का अखंड स्मरण करते हे अक्षर निवासी हुए है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें जन्मोत्सव प्रसंग के उपलक्ष्य में प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में आयोजित सभा में उद्‌बोधन करते हुए पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा विकलांगो को ट्रायसिकल अर्पण करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।(२) बापूनगर में समूह महापूजा में विराजमान प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा ब्लड डोनेशन करते हरिभक्त तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से महिला मंडल द्वारा हरि गीता पारायण ।(३) दिल्ही मंदिर में श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक दर्शन ।(४) बोपल मंदिर में झूला दर्शन ।(५) ४१ वे जन्मोत्सव प्रसंग के उपलक्ष्य में वडनगर मंदिर में समूह महापूजा ।(६) प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें जन्मोत्सव प्रसंग के उपलक्ष्य में नारायणघाट से कालुपुर पदयात्रा ।(७) प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें जन्मोत्सव प्रसंग के उपलक्ष्य में बालवा मंदिर में ७४१ मिनिट की अखंड धुन तथा ब्लड डोनेशन केम्प ।

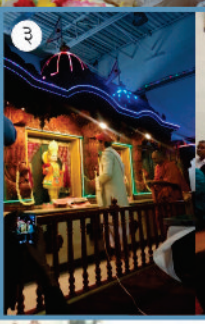

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

(१) कार्डिफ (यु.के.) मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में तथा भुज-अमदाबाद मंदिर के संतो की उपस्थिति में कथा पारायण तथा प.पू. बड़े महाराजश्री को श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिये चेक अर्पण करते हुए हरिभक्त तथा प.पू. बड़े महाराजश्री साथ में कार्डिफ युवक मंडल । (२) एल.ए. मंदिर में ठाकुरजी को फूलो से अलंकृत दर्शन । (३) टोरन्टो केनेडा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री साथ में पी.पी. स्वामी । (४) रेजीयाना केनेडा में सत्संग सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री । (५) शिकागो मंदिर में जलझीलणी का ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए संत । (६) डिट्रोईट मंदिर में पाटोत्सव दर्शन तथा सत्संग सभा । (७) अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर करांची में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग का लाभ देते हुए प.भ. जी.के. पटेल तथा प.भ. अश्विनभाई शाह ।

V-टी.वी. चेनल पर ''देवदर्शन'' पर देखे ''श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अमदावाद दर्शन ता. १९-१०-१३ समय सायंकाल ६-३० बजे तथा २०-१०-१३ समय प्रात : ८-३० बजे

Jagadish Offset

Praful Kharsani